राजस्थानी कला में रामगोपाल विजयवर्गीय जी का योगदान

ज्योति रानी
शोधार्थिनी, ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
Email: pawankumarjyoti@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

ज्योति रानी

''राजस्थानी कला में रामगोपाल विजयवर्गीय जी का योगदान'

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. 1, pp. 51-56

https://anubooks.com/?page_id=6863

सारांश

राजस्थानी चित्रकला स्वतंत्रता से पहले ही अपना अस्तित्व खो चुकी थी। वहॉ की स्थानीय लघुचित्र शैलियॉ भी खत्म होती जा रही थी। कला सृजन का वैभव तथा गरिमा पूरी तरह से समाप्त हो चुकी थी। राजस्थानी कला में सन् 1955 ई0 के समय एक नया मोड़ आया कई युवा कलाकार राजस्थान में आये और चित्रण करने लगे। राजस्थान में कलाकारों ने कला और साहित्य में अपनी मिट्टी की गंध को सम्मिलित करना आरम्भ कर दिया। इस क्रम में स्व0 रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने राजस्थान की लोक संस्कृति, प्राकृतिक सौन्दर्य और जनजीवन एवं प्रकृति के सभी रुपों का चित्रण किया। इन्होने राजस्थान के लोकजीवन एवं राजस्थानी शैली का बहुत सूक्ष्मता से निरीक्षण किया। इन्होने वहॉ के ग्रामीण जीवन को यर्थाथ रुप में चित्रण करना आरम्भ किया।

स्व0 रामगोपाल विजयवर्गीय जी राजस्थान के कला जगत में एक वट–वृक्ष के रुप में जाने गये है, भारत की पारंपरिक कला शैली के रुपांकन में राजस्थान के कला जगत को अपनी अनवरत कला साधना के द्वारा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निभाकर पुनर्जागरण प्रक्रिया को सुदृढ धरातल प्रदान किया। विजयवर्गीय जी राजस्थान में कलाकारों के लिए आर्दश गुरु व आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने। रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने कला के नवोत्थान का राजस्थान में सफल नेतृत्व किया।

ज्योति रानी

प्रस्तावना

रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने अपने चित्रण को कभी एक विषय में बांध कर नही रखा। इन्होने अनेक विषयों पर कार्य किया है। इनके चित्रों में परम्परागत पुराण, इतिहास, धर्म, साहित्य, कथायें, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन तथा प्रकृति पर सैकड़ों चित्र प्राप्त हुये है। इन्होंने राजस्थानी जनजीवन पर बहुत अधिक कार्य किया है इन्होंने जो प्रेरक चित्र बनाये हैं वे कला जगत की अमूल्य धरोहर है। विजयवर्गीय जी बहुमुखी कला प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने केवल चित्रकला में ही नही बल्कि अन्य कई विधाओं जैसे कहानी लेखन, साहित्य लेखन, कविता लेखन तथा काव्य कला आदि सभी में कार्य किया तथा अपने मन की अभिव्यक्ति प्रकट की है। इनके चित्र अनेको पत्रिकाओं में छपे। विजयवर्गीय जी को उनकी अनवरत कला साधना के लिए अनेकों सम्मान दिये गये तथा देश–विदेशों में इनके चित्रों की प्रदर्शनी लगी जिस कारण इन्होंने विश्व में ख्याति प्राप्त की। विजयवर्गीय जी एक सुलझे हुए, विचारशील कलाकार हुये। राजस्थान के कला जगत में विजयर्गीय जी का विशेष योगदान रहा है।

मनुष्य का कला से सम्बन्ध कब हुआ होगा, इस विषय में निश्चित रुप से कुछ कहना कठिन है, किन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि यह प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनो रुपों में मानवीय चेतना के लिए वरदान ही होगा। कला का सदैव ही उसकी जमीन से जुड़ाव रहा है और इसी कारण वह मनुष्य के वाणी एवं कृति से श्रोता, पाठक, दर्शक को प्रसन्न या अप्रसन्न करने का प्रयत्न करते है। मानव में कला के द्वारा अभिव्यक्ति प्राचीन काल से ही चली आ रही है।

जब भी राजस्थान की कला की बात की गई है हमेशा विद्वानों, विचारकों, राजनेताओं ने यही कहा है कि राजस्थान की कला परम्परा बहुत मजबूत है किन्तु यह बात तब गलत सिद्ध हुई जब 1960 ई0 से पहले राजस्थान ललित कला अकादमी की दिल्ली में प्रदर्शनी आयोजित हुई तथा सुप्रसिद्ध कला समीक्षक चार्ल्स फाबरी ने बहुत ही निर्भिकता से कहा कि राजस्थानी कलाकार बिल्कुल मर चुका है। राजस्थानी चित्रकला स्वतंत्रता से पहले ही अपना अस्तित्व खो चुकी थी, वहाँ की स्थानीय लघुचित्र शैलियॉ भी खत्म होती जा रही थी। नाथद्वारा जो परम्परागत चित्रकला का अंतिम क्षेत्र रहा है वहॉ भी केवल तीर्थ यात्रियों की सस्ती मांग ही पूरी की जा रही थी तथा ''यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कि कला सृजन का प्राचीन वैभव तथा गरीमा प्रायः लुप्त हो चुकी थी। इस समय राजस्थान की कला पर सस्ती कैलेण्डरनुमा कला का प्रभाव पड़ रहा था।''[1]

राजस्थानी कला में सन् 1955 ई0 के आसपास एक नया मोड आया था। देश के विभिन्न संस्थानों से कला की शिक्षा पूर्ण कर कई युवा कलाकार राजस्थान में आये और राजस्थान की परम्परागत चित्रण शैली में अपनी सीखी हुई तकनीक को सम्मिलित करते हुए चित्रण कार्य करने में लग गये। राजस्थान में कलाकारों ने कला और साहित्य में अपनी मिट्टी की गंध को सम्मिलित करना प्रारम्भ कर दिया था। कलाकारों ने राजस्थान के दृश्य चित्र, लोकजीवन और प्रकृति के विभिन्न अवयवों को अधिकाधिक संख्या में चित्रित किया। ''चित्रण के इस क्रम में वरिष्ठ चित्रकार कलागुरु पद्मश्री स्व0 रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने राजस्थान की लोक संस्कृति, प्रकृति सौन्दर्य और जनजीवन एवं प्रकृति के विभिन्न अंगों को अपनी कलाकृतियों में अपने चित्रण का विषय बनाया है। इन्होंने राजस्थान की लोकजीवन शैली और उनके प्रति के साथ तारतम्यता को सूक्ष्मता से देखा। इन्होंने ग्रामीण जीवन के

वातावरण को कैमरे की भांति यर्थाथ रुप में चित्रित करने की शक्ति एवं समर्थ तूलिका ने अनुपम रेखा और रंगों के सामंजस्य से उत्कृष्ट रुपायन प्रस्तुत किया।''[2] स्व0 रामगोपाल विजयवर्गीय जी राजस्थान के कला जगत में एक वट–वृक्ष के रुप में जाने जाते है, मरुप्रदेश की कला जिसकी शीतल एवं निर्मल छांव में पोषित हुई। भारत की पारंपरिक कला शैली के रुपांकन में राजस्थान के कला जगत को अपनी अनवरत कला साधना के द्वारा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर पुनर्जागरण प्रक्रिया को एक सुदृढ ध ारातल प्रदान किया। सर्वमान्य कला गुरु विजयवर्गीय जी राजस्थान में कलाकरों के लिए आर्दश व आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहे।

राजस्थानी चित्रकला की अपनी प्रमुख विशेषता रही है काव्य को आधार बनाकर चित्रण करना। विजयवर्गीय जी ने भी संस्कृत और हिन्दी काव्यों को अपने चित्रण में आधार बनाकर चित्रित किया है, जिस कारण यह उनकी कृतियों की पहचान बन गई। भारत के उन यशस्वी व कलाचार्यो में रामगोपाल विजयवर्गीय जी का नाम लिया जाता है जिन्होंने कला के नवोत्थान का राजस्थान में सफल नेतृत्व किया।

दुनिया में कुछ कलाकारों को ही कला के माध्यम से पर्याप्त यश, सम्मान व धन कमाने का अवसर प्राप्त होता है रामागोपाल विजयवर्गीय जी उन्ही में से एक हुये। विजयवर्गीय जी ने अपनी कला यात्रा के दौरान बहुत संघर्श किया तथा उन्हे इसका यथायोग्य पुरस्कार भी अवश्य प्राप्त हुआ। ''सवाई माधोपुर जिले के एक छोटे से गॉव करौली, ठिकाना बालेर में, 1905 ई विजयवर्गीय जी का जन्म हुआ।''[3] रामगोपाल विजयवर्गीय जी के पिता भँवरलाल विजयवर्गीय बालेर ठिकाने में दीवान पद पर तैनात थे। व्यवसायी प्रवृति के कारण ही आपके पिता ने आपको वकील बनाने का स्वप्न देखा, जिस कारण उन्होंने घर पर ही शिक्षा की व्यवस्था की। उर्दू–फारसी, संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी के लिए अलग–अलग शिक्षकों को लगाया गया। संस्कृत शिक्षक ठाकुर श्रीनाथसिंह के संग्रह में बहुत सी पुस्तके थी जिससे मेघदूत, रघुवंश, कुमारसंभव, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, गीत–गोविन्द, कथा–कादम्बरी, रुबाइत उमर–खैय्याम, दीवाने हाफिज पढने और कविता लिखने में इनकी रुची निरन्तर बढती गयी। उनमें कला के प्रति बचपन से ही गहरी रुचि थी। कला की इस अनूठी दुनिया से तूलिका और रंगो द्वारा उनका परिचय एक घुमक्कड़ साध ू ने कराया था। बचपन में इसी साधू द्वारा उन्होंने कला के मूल सिद्धान्त सीखें। उनके पिता भंवरलाल ने जब चित्रकला के प्रति उनका अटूट प्रेम देखा तो उन्होने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्टस में उनका प्रवेश कराया। जहॉ उनके गुरु के रुप में उन्हें शैलेन्द्रनाथ डे का निर्देशन प्राप्त हुआ। जिनके प्रभाव के कारण ही उन्होंने भारतीय कला को मौलिक अभिव्यक्ति द्वारा समृद्ध किया।

''विजयवर्गीय जी की कला में तीन रुपांकन शैलियों–राजस्थानी शैली, बंगाल स्कूल तथा अजंता चित्र शैली का प्रभाव दृष्टिगत होता है।''[4] विजयवर्गीय जी भारत के ऐसे प्रसिद्ध कलाकारों में गिने गये जिन्होंने पुनर्जागरण आन्दोलन का राजस्थान में सूत्रपात किया जिसका प्रारम्भ अवनीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा किया था तथा अपने गुरु शैलेन्द्रनाथ डे से भी इतने प्रभावित हुये थे कि बंगाल स्कूल के पुनर्जागरण आन्दोलन का सूत्रपात उन्होंने राजस्थान में किया तथा भारतीय कला को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति से

समृद्ध किया। ''विजयवर्गीय जी ने बंगाल की वॉश तकनीक, अजंता की रेखाओं के सुकोमल एवं लावण्यमय, लयात्मकता एवं राजस्थान की परम्परागत चित्रकला का अद्भुत व अनुठा सम्मिश्रण कर अपने चित्रों में धार्मिक, साहित्यिक व परम्परागत विषयों को प्रकृति के साथ अन्तःसंबंध कर चित्र फलक पर चित्रित किया है।''[5]

इनके चित्रों के विषयों में गॉव की चौपाल, गर्मी की धूप में विश्राम करते पशु और ग्रामीण पहाड़ियों व बंजर भूमि में लहराती पगडंडियॉ, गॉव की झोपडियॉ आदि इनकी कला के मुख्य स्त्रोत रहे है।

विजयवर्गीय जी की शैली में मौलिकता का भाव पाया जाता है अनुकरणात्मकता का भाव नहीं। इसी मौलिकता के गुण के कारण इनकी शैली विजयवर्गीय शैली कहलायी जाती है। किसी की शैली को पूरे चित्र को आधार मानकर जाना नही जा सकता किन्तु तुलिका आघात, आकार, रेखाएँ, रंग आदि को आधार मानकर पहचानी जा सकती है। सन् 1928 ई0 से राजस्थान में एक चित्रकार के रुप में इनकी कला प्रारम्भ हुयी जिसके बाद इन्होंने राजस्थान में बहुत कार्य किया तथा यह कार्य अंतिम समय तक निरन्तर चलता रहा। अपनी कला यात्रा के दौरान विभिन्न विपत्तियों के उपरान्त भी आपने राजस्थानी कला में विशेष योगदान दिया विजयवर्गीय जी ने सन् 2003 ई0 में अपनी अंतिम श्वास ली।

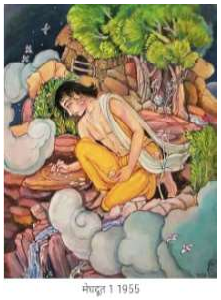

मेघदूत 1 1955

अपने कला सृजन को रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने कभी एक विषय में बांध कर नही रखा, बल्कि इन्होंने अपने विषयों पर कार्य किया। इनके चित्रों में परम्परागत पुराणों, इतिहास, धर्म, साहित्य, कथाओं के साथ सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृत जीवन तथा प्रकृति आदि विषयों पर सैकड़ो चित्र प्राप्त हुए है। ''विजयवर्गीय के चित्रों में ''नारी'' चित्रण अत्यधिक कमनीय लावण्यमय एवं भावोद्रेक है नारी आकृतियॉ अत्यन्त आकर्षक, विभोहित करने वाली है। उनके चित्रों का बहुत महत्वपूर्ण पक्ष नारी की सर्जना है।''[6]

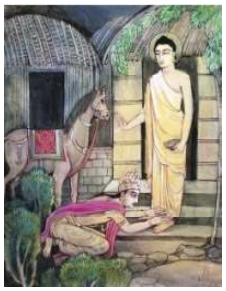

''कला रसिकों को सरोबार करने वाले श्री रामगोपाल विजयवर्गीय ने महाकवि कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्','कुमार सम्भव' तथा 'मेघदूत' के मार्मिक प्रसंगो को अपनी विषय–वस्तु बनाकर पचास–पचास चित्रों की श्रृंखलाएं बनायी, जो उनके कृतित्व की एक अलग से पहचान बन गई है।''[7]

इन्होंने राजस्थानी जनजीवन पर भी बहुत अधिक कार्य किया। उन्होंने अनेक प्रेरेक चित्र भी बनाये जो कला जगत की अमूल्य धरोहर के रुप में मौजूद है

विजयवर्गीय जी बहुमुखी कला प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने केवल चित्रकला में ही कार्य नहीं किया बल्कि कहानी लेखन, साहित्य लेखन, कविता लेखन, काव्य कला के द्वारा भी अपने मन की अभिव्यक्ति प्रकट की है। विजयवर्गीय जी की विशेष रुचि रंगो की अपेक्षा रेखाओं पर अधिक थी। इनके कुछ चित्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुये। ''इनका

पहला चित्र सर्वप्रथम 'मार्डन रिव्यू' में प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात तो अनके हिन्दी, उर्दू, बंगाली पत्र–पत्रिकाओं में भी इनके चित्र प्रकाशित हुये व ख्याति फैली।''[8] नया समाज, विशाल भारती, लहरा, धर्मयुग, माया, कलावृत्त, कला–किरण, आकृति आदि प्रमुख पत्रिकाये है जिनमें इनके लेख व अनेक चित्र प्रकाशित हुये। उन पर केन्द्रीय एवं राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा मोनोग्राफ भी प्रकाशित किया गया। विभिन्न संग्रहों तथा निजी संग्राहकों के पास विजयवर्गीय जी के अनेक महत्वपूर्ण चित्र मौजूद है। देश–विदेश के अनेक संग्रहालयों में भी इनके चित्र संग्रहीत है।

''संस्मरणों और घटनाओं के नाम पर बहुत कुछ है जिसे बयान किया जा सकता है। कलाकार विजयवर्गीय के रचना संसार को देखे तो पेंसिल, पेन, कलम या ब्रश जो कुछ भी सामने आ जाता है, उसे लेकर इनका हाथ चलता ही रहता। फिर चाहे कोई बात भी चलती रहे पर साथ–साथ हाथ भी चलता रहेगा।''[9] इन्होंने कभी फलक के मामले में इतनी गंभीरता से नहीं सोचा। इनके इस विशेष गुण का ही श्री बृज–मोहन की पंक्तिया सटीक वर्णन करती है। ''विजयवर्गीय जी बैठे चित्र बना रहे है। आकृति बन चुकी है रंग भरा जा रहा है। सहसा रंग समाप्त हो गया। बाजार में रंग मिलता नही, कलकत्ते से रंग मंगाना पड़ेगा लेकिन कलकत्ता से रंग आने तक की ताब किसको। सामने सफेद जूते पर लगाने की पालिश रखी है। विजयवर्गीय जी ने उसे उठाकर घोला और उसी से चित्र बनाकर पूरा कर दिया।''[10] पालिष से बना यह चित्र भारत के प्रसिद्ध कला संग्राहलय में सुरक्षित रखा है। विजयवर्गीय जी स्वंय में ही एक पूर्ण है। जिनकी अपनी अलग ही एक पहचान है। रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने न केवल कागज पर कार्य किया बल्कि सफेद या बादमी रंग के सिल्क पर भी कार्य किया था जिसका श्रेष्ठ उदाहरण हमें राजस्थान ललित कला अकादमी में रखा 2/4 आकार का 'राधा का श्रंगार' नामक चित्र है।

विजयवर्गीय जी के समय यूरोपियन चित्रकारों द्वारा भी भारतीय चित्रकार प्रभावित होने लगे थे तथा भारतीय चित्रकार अपने देश, काल तथा भूमि से विमुख होने लगे। कला की प्रणालियों में परिवर्तन होने के कारण नयी विधाये उत्पन्न हुयी। रामगोपाल विजयवर्गीय जी जोकि अपने देश, भूमि और परम्परा से जुड़े हुये थे वे भी इस नवीन विकासोन्नमुख धारा से प्रभावित हो गये। तथा विजयवर्गीय जी के तेल चित्र श्रृखंला इसी श्रेणी में आते है। किन्तु आपके द्वारा इस आधुनिक शैली का अंधा अनुकरण नही किया गया बल्कि अध्यारोपित भिन्न पहचान वाले बिम्बों की रचना तथा पुष्ट रेखओं में निर्मित सरल आकृतियों को बनाकर आपने निजी शैली को विकसित किया। ''इन चित्रों में भी तल विभाजन, आकृतियों का साधारणीकरण तथा रंग समायोजन अनूठा है। आपने तेल रंगों की मोटी परत नही लगाई बल्कि परम्परागत तरीके से ही काम किया। ''सत्य, अहिंसा और गाँधी'' नामक चित्र इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।''[11]

विजयवर्गीय जी को उनकी अनवरत कला साधना के लिए अनेकों सम्मान दिये गये। ''1970 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा श्री विजयवर्गीय को 'कलाविद्' की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा 1984 में भारत के भू0पू0 राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा 'पदम्श्री' से अलंकृत किया गया। 1987–88 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा फैलोषिप प्रदान की गयी तथा 1988 में केन्द्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा ''रत्न–सदस्यता'' प्रदान की गयी। भू0पू0 प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर द्वारा फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसाइटी नई दिल्ली की 63वीं वार्षिक कला–प्रदर्शनी के अवसर पर आपको कला रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। सन् 1992 में भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ0 शंकर

दयाल शर्मा द्वारा आपके सम्मान में 'रुपांकन' अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण किया गया। आप एक ख्याति प्राप्त चित्रकार थे।''[12] इनके चित्रों की प्रदर्शनी बम्बई, बनारस, लाहौर, लखनऊ, इलाहाबाद, दिल्ली, कलकत्ता आदि अनेक जगह लगी। देश के अलावा इनके चित्रों की प्रदर्शनी विदेशों में भी लगी जिस कारण इन्होंने विश्व में ख्याति प्राप्त की। रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने कहा था–हम भारतीय है और हमारे सृजन में भी भारतीयता की छाप होनी चाहिए। इसलिए कहा जा सकता है कि विजयवर्गीय जी एक सुलझे हुए, विचारशील कलाकार हुये। राजस्थान के कला जगत में विजयवर्गीय जी का विशेष योगदान रहा है।

आज जो देशज भावना राजस्थान के समकालीन चित्रकारों में प्रतिलक्षित होती है उसका श्रेय मुख्य रुप से रामगोपाल विजयवर्गीय जी को ही जाता है। जब से राजस्थान ललित कला अकादमी की स्थापना हुयी तभी से आप उसमें सक्रीय रुप से जुड गये तथा आपको पहले रत्न सदस्य होने का गौरव प्राप्त हुआ। ''विजयवर्गीय जी का मानना है कि कला जीवन की परिभाषा है, संस्कार है। चित्रकला का ध्येय आनंद की उपलब्धि और परमानंद की प्राप्ति है। वह लौकिक विषय नहीं, अलौकिक विषय है। वह बहिर्जगत का व्यापार नही, अन्तर्जगत का विषय है। जैसे सौदंर्य का उपासक रुप की साधना से रसमयी सिद्धी लेकर आनंद तक पहुचता है और आनंद से परमानंद का सामीप्य ग्रहण करता है। उनके शब्दों में चित्रकला का यह संक्षिप्त परिचय है। वही उनका कहना है कि प्रत्येक मानव चित्रकार है।''[13]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कलोषिया, ज्वाला प्रसाद, 2015, *ललित कला एवं सौन्दर्य पत्रिका,* कला एवं सांस्कषतिक केन्द्र, उदयपुर, पृ–**29**
2. कलोशिया, ज्वाला प्रसाद, 2015, *ललित कला एवं सौन्दर्य पत्रिका,* कला एवं सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर, पृ –**29**
3. प्रभाकर, मनोहर, रामगोपाल विजयवर्गीय, ललित कला अकादमी, दिल्ली
4. चतुर्वेदी, ममता, 2016, समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ –**59**
5. कलोशिया, ज्वाला प्रसाद, 2015, *ललित कला एवं सौन्दर्य पत्रिका,* कला एवं सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर,पृ –**30**
6. दमामी, ए0एल0, 2004, *राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद्,* हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, पृ–**31**
7. शर्मा, डॉ देवदत्त, *सुजस सांस्कृतिकी,* पापुलर प्रिन्टर्स फतह टीबा मार्ग, मोती डूंगरी रोड, जयपुर
8. प्रताप, रीता, 2013, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ–**410–411**
9. *समकालीन कला,* ललित कला अकादमी, अंक 9–10, पृ–**13**
10. *समकालीन कला,* ललित कला अकादमी, अंक 9–10, पृ–**14**
11. चतुर्वेदी, ममता, 2016, *समकालीन भारतीय कला,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ–**41**
12. अग्रवाल, जी0के0, 2011, *आधुनिक भारतीय चित्रकला,* संजय पब्लिकेशन, आगरा, पृ–**61**